वो अभिनेत्री, जिनकी बेबाकी को पसंद करती है दुनिया!

मुबारक साल गिरह अभिनय की कला के लिए समर्पित हर कलाकार के मन में यह इच्छा जरूर होती है कि, वह एक बार हॉलीवुड की किसी फिल्म का हिस्सा बन सके. जबकि, हॉलीवुड के हर कलाकार की इच्छा होती है कि वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री मेरिल स्ट्रीप के साथ स्क्रीन शेयर कर सके.

21 अकादमी पुरस्कारों और 31 गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड्स के लिए नामांकित

होकर इतिहास रचने वाली इस अभिनेत्री के सामने अभिनेता भी खुद को छोटा मानते हैं. मेरिल वो शख्सियत है, जिसने हॉलीवुड को यह बताया कि अभिनेत्रियां केवल खूबसूरती की नुमाइश करने के लिए या फिल्म में ग्लैमर का तड़का लगाने भर के लिए नहीं होतीं. बल्कि, उनकी कला दर्शकों को थिएटर में खींच लाने के लिए काफी है.

हाल ही में जब, उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के खिलाफ अपने विचार रखे तो पूरी दुनिया ने उन्हें गंभीरता से सुना. उनकी स्पीच रातों-रात वायरल हो गई. जिस भाषण पर उनका विरोध हो सकता था उस पर लोगों ने ठहाके लगाए और तालियां बजाईं.

ऐसे में मेरिल को जानना दिलचस्प हो जाता है—

जीवन पर रहा पिता का प्रभाव रहा

मैरी लुईस स्ट्रीप का जन्म 22 जून 1949 को न्यू जर्सी में हुआ. उनके पिता हैरी विलियम स्ट्रीप जूनियर प्रोफेसर और मां मैरी विल्किन्सन स्ट्रीप आर्ट डॉयरेक्टर थीं. आज मेरिल को देखकर कहा जा सकता है कि उनके जीवन पर पिता से ज्यादा मां का प्रभाव रहा.

मां का साथ होते हुए भी मेरिल ने सीधे अभिनय की दुनिया में कदम नहीं रखा था. बल्कि, जब वे 12 साल की थीं, तब उन्हें स्कूल के संगीत कार्यक्रम में हिस्सा लेने का मौका मिला. हालांकि, मेरिल को संगीत में कोई रूचि नहीं थी.

उन्होंने एक इंटरव्यू में उस वाक्ये का जिक्र करते हुए कहा कि मैंने गाने की काफी कोशिश की, पर मुझे एक सुर ही समझ नहीं आ रहा था. ऐसे में जरूरी था कि मैं संगीत की राह पर चलने की बजाए अपने लिए कुछ बेहतर तलाश करने की कोशिश करूं. उन्होंने लगभग 4 साल संगीत के क्षेत्र में काम किया पर काम से संतुष्टि नहीं मिलने के बाद गायकी से हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया.

इसके बाद उन्होंने स्कूल में होने वाले नाटकों में हिस्सा लिया. 1969 में कॉलेज में 'मिस जूली' नाम से एक नाटक होना था. वह नहीं जानतीं थी कि अभिनय की कला उनके भीतर कहीं छिपी हुई है, पर चूंकि कला के क्षेत्र में काम करने की इच्छा थी, इसलिए उन्होंने अभिनय को चुना.

मेरिल ने नाटक में मैरिलन मोनरो का किरदार निभाया और उनकी शानदार अदाकारी ने दर्शकों का दिल जीत लिया.

आर्थर से सीखीं अभिनय की बारीकियां

यहां तक कि उनकी मां और प्रोफेसर भी यह विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि मेरिल इतनी अच्छी अभिनय कला की धनी हैं. पर कहते हैं कि जीवन में सबकुछ आसानी से नहीं मिलता. जहां एक ओर मेरिल में अभिनय का बीज बारीकियां सीखीं.

ऑडिशन में हुईं फेल, फिर दिखाया जौहर

डिग्री हासिल कर ली गई थी और अभिनय की बारीकियां भी सीख लीं गईं थी. अब बारी थी सीधे मैदान में उतरने की. मेरिल ने 'द प्लेबॉय ऑफ़ नेविल्ल' और 'द डेडलिएस्ट सीजन' के साथ टीवी की दुनिया में आगाज किया पर वे फिल्मों में करियर बनाना चाहतीं थीं.

आखिर मेरिल ने 1976 में पहली बार इतालवी फिल्म निर्माता डिनो डी लारेंटिएरेस के सामने फिल्म किंग कांग के लिए ऑडिशन दिया. लारेंटिएरेस ने उनके अभिनय पर गौर करने की बजाए कहा उनके चेहरे पर तंज कसा. दरअसल, लारेंटिएरेस को मेरिल के चेहरे में खूबसूरती नजर नहीं आई. मेरिल ने निडरता के साथ कहा कि ' मैं जो हूं, जैसी हूं आपके सामने हूं. मुझसे अभिनय की उम्मीद करें, खूबसूरती की नहीं.'

मेरिल का बेबाकीपन हमेशा उनके साथ रहा.

कई ऑडिशन में फेल हो जाने के बाद भी उन्हें 1977 में फिल्म जूलिया में काम करने का मौका मिला. हालांकि, इस फिल्म में उनके कई अच्छे संवाद और हिस्से काट दिए गए. आखिर पहली फिल्म होते हुए भी मेरिल की अदाकारी दर्शकों के सामने खुलकर नहीं आ सकी.

इसके बाद भी मेरिल ने अपना हौंसला नहीं खोया. वे अगली फिल्म द डियर हंटर के साथ एक बार फिर दर्शकों के सामने थीं. प्रसिद्ध फिल्म आलोचक पॉलिन कायले ने जब फिल्म रिव्यू लिखा तो उन्होंने मेरिल के बारे में कहा कि 'वे वाकई खूबसूरत हैं.'

...और ऑस्कर में हुई नामंकित

फिल्म जूलिया के लिए उन्हें ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के तौर पर नामंकित किया गया. इसके अलावा फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फिल्म श्रेणी के लिए अकादमी पुरस्कार भी जीता. बस यही से मेरिल के सफल अभिनय सफर की शुरुआत हो चुकी थी.

1978 में उन्होंने होलोकॉस्ट की मिनी सीरीज में काम किया, जिसमें उन्होंने एक ऐसी जर्मन महिला भी भूमिका निभाई, जिसने हिटलर के शासन के दौरान एक यहूदी कलाकार से शादी की थी. इस सीरीज में काम करने के बाद मेरिल पूरी दुनिया में छा गईं. हर निर्माता-निर्देशक उन्हें अपनी फिल्म में लेने के लिए आतुर थे. अपने अभिनय के कारण मेरिल ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का प्राइम टाइम एमी पुरस्कार हासिल किया.

...जब टूट गया मेरिल का दिल

कहते हैं मेरिल अपने करियर पर ध्यान केवल इसलिए दिए हुईं थीं, क्योंकि उनकी जिंदगी में 'जॉन कैज़ाल' शामिल थे.

जॉन मेरिल से बहुत प्यार करते थे और उनके हर बुरे वक्त में साथ रहे. मेरिल और जॉन तीन साल रिश्ते में रहे, तभी उन्हें पता चला कि जॉन को कैंसर है. जब तक यह पता चला तब तक इलाज के लिए देर हो चुकी थी. इसी क्रम में जिस साल मेरिल कला जगत के आसमान पर छा जाने की तैयारी कर रहीं थीं, ठीक उसी साल 1978 में जॉन ने दुनिया को अलविदा कर दिया.

अंकुरित हुआ था, वहीं उन्हें अल्सर जैसे गंभीर रोग ने अपनी चपेट में ले लिया. गिरते स्वास्थ्य के कारण मेरिल ने अभिनय से किनारा कर लिया और पूरा ध्यान पढ़ाई में लगा लिया.

स्कूल खत्म कर उन्होंने कॉलेज में मास्टर डिग्री पूरी की. अपनी डिग्री के आखिरी साल में उन्हें मालूम हुआ कि यूजीन ओ'नेल थिएटर सेंटर में राष्ट्रीय रंगमंच सम्मेलन का आयोजन हो रहा है.

आखिर एक बार फिर मेरिल की दबी हुई प्रतिभा सामने आई और उन्होंने नाटक में हिस्सा लिया. उन्होंने न्यूयॉर्क शेक्सपियर प्रोडक्शंस के हेनरी वी, द टमिंग ऑफ द शू, और माईजर या मेजर नाम के नाटकों में हिस्सा लिया.

अभिनय की खूबसूरत पेशकश के बाद मेरिल के कई फैंस तैयार हो गए.

मेरिल भी समझ चुकीं थी कि अब उन्हें, जो करना है वह अभिनय के क्षेत्र में करना है. आखिर उन्होंने 1971 में वस्सार महाविद्यालय से नाटक में बी.ए. की डिग्री हासिल की और अभिनेत्री जीन आर्थर के साथ रहकर अभिनय की

जॉन के जिंदगी से चले जाने के बाद कुछ वक्त मेरिल खुद को सम्हाल नहीं पाईं. पर फिर उन्होंने खुद को दुख के भंवर से खुद निकाला और एक साल बाद 1979 में फिल्म 'द सीडिंग ऑफ जो टिएनान' की शूटिंग शुरू की.

इस फिल्म में मेरिल ने एक विवाहित महिला का किरदार निभाया, जो अपने पति और बेटे को छोड़ देती है.

चैलेंजिंग भूमिकाओं में दिखाई प्रतिभा

करियर की शुरुआत में जहां अभिनेत्रियां कम उम्र के रोल करतीं हैं, वहां एक 45 साल की महिला का किरदार निभाकर, उन्होंने साबित कर दिया कि वे ग्लैमर के पीछे नहीं भाग रहीं हैं. यह फिल्म उनके करियर के लिए मील का पत्थर साबित हुई.

चैलेंजिंग भूमिकाएं निभाकर साबित की प्रतिभा 1980 के दशक में मेरिल ने फिल्मों में मुख्य चरित्र वाली भूमिकाएं करना शुरू किया. उसी साल उनकी तस्वीर न्यूज़वीक के '80 के दशक के स्टार्स' की लिस्ट में प्रकाशित हुई.

1981 में मेरिल ने 'द फ्रांसीसी लेफ्टिनेंट्स विमेन' में काम किया, जिसके लिए उन्होंने ब्रिटिश उच्चारण करना सीखा.

इसके लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में बाफ्टा पुरस्कार हासिल हुआ. मीडिया में कहा गया कि कलाकार अपने सफल चरित्रों को दोहराते हैं, पर मेरिल उनसे जुदा हैं, क्योंकि उन्होंने सिनेमा के अनुकूल भूमिकाओं को चुना.

ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का अवॉर्ड

इसके बाद रॉबर्ट बेंटन के साथ दूसरी बार मनोवैज्ञानिक थ्रिलर फिल्म 'द नाइट ऑफ द नाइट' में काम किया. 'सोफी चॉइस' में उन्होंने बार डांसर की भूमिका अदा की, जो पोलिश नरसंहार से बचने वाली महिला थी. उनके पोलिश संवाद दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने में सफल रहे. इसके लिए उन्होंने ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का अवॉर्ड अपने नाम किया.

विश्व प्रसिद्ध फिल्म आलोचक रोजर एबर्ट ने मेरिल के बारे में कहा कि मैंने मेरिल के अभूतपूर्व प्रदर्शनों को देखा है. मैं कल्पना नहीं कर सकता कि इससे बेहतर चरित्र कोई और निभा सकता है. उनका अभिनय वास्तविक और सरल है.

1983 में परमाणु आंदोलन और श्रम संगठन के कार्यकर्ता करेन सिल्कौड की रहस्यमयी मृत्यु पर आधारित फिल्म 'सिल्कवुड' में काम किया. जिसमें उनके चरित्र मैरीलैंड ने दर्शकों के दिलों में जगह बना ली. 1984 में फिल्म 'फिलिंग इन लव' अभिनेता रॉबर्ट डी नीरो के साथ काम किया. फिल्म 'प्लांटी' में उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के एक योद्धा की भूमिका निभाई. यह उनके जीवन का सबसे चैलेंजिंग रोल था.

मेरिल दिखने में आर्कषक नहीं थीं, मगर...

मेरिल दिखने में बहुत आर्कषक नहीं थीं, पर उनके अभिनय में वो बात थी कि वे एक से बढ़कर एक फिल्मों का हिस्सा बनती जा रहीं थीं. उन्होंने फिल्म 'आउट ऑफ अफ्रीका' में काम किया, जिसने ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म श्रेणी में पुरस्कार हासिल किया. खास बात यह थी कि यहां मेरिल को भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में नामांकन मिला.

1986 में 'हार्टबर्न' और 'आयरन वाइड' और 1988 में 'एविल एंजल्स' फिल्म में उनके काम की पूरी दुनिया में सरहाना की गई. उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई फिल्म इंस्टीट्यूशन अवॉर्ड, कान फिल्म फेस्टिवल अवॉर्ड तो जीता ही, साथ ही ऑस्ट्रेलियाई भाषा की फिल्मों के अन्य पुरस्कारों के लिए भी नामंकित हुईं. भाषा पर अच्छी पकड़ होने के कारण उन्हें न्यूयॉर्क क्रिटिक्स सर्कल पुरस्कार दिया गया.फिल्म 'सी-डेविल' के जरिए मेरिल ने एक असाधारण लेखक के चरित्र को साकार कर दिखाया. इस फिल्म की समीक्षा करते हुए टाइम मैगज़ीन ने लिखा कि फिल्म को केवल मेरिल के लिए देखा जाना चाहिए.

इस तरह लग गए पुरस्कारों के ढ़ेर

80 के दशक में मेरिल जहां आसमान की बुलंदियों पर थीं, वहीं 90 के दशक में उनके करियर में गिरावट शुरू हुई. मेरिल की कुछ फिल्में असफल रहीं. यह दौर कॉमेडी फिल्मों का था. दर्शक 40 साल की अभिनेत्री से यह आशा नहीं कर सकते थे कि वह उन्हें गुदगुदा भी सकती है.

हालांकि, 1990 में उन्होंने अपने अभिनय का नया शेड दिखाते हुए कॉमेडी फिल्म 'पोस्टकार्ड फ्रॉम द एज', 1991 में फंतासी फिल्म 'डिफेंडिंग योर लाइफ', 1992 में ब्लैक कॉमेडी फिल्म 'डेथ बूम्स रेट' और 1993 में ड्रामा फिल्म 'द हाउस ऑफ द स्पिरिट' की.

हालांकि, दर्शकों ने उनके इस नए रूप को स्वीकार नहीं किया. मेरिल का करियर बुरे दौर से गुजर रहा था कि तभी उन्हें 1995 में क्लिंट ईस्टवुड ने रोमांटिक फिल्म 'द ब्रिज ऑफ मैडिसन काउंटी' के लिए साइन किया.

इस फिल्म की सफलता के साथ एक बार फिर मेरिल हॉलीवुड के रेड कॉरपेट पर पहुंच गईं.1996 में फिल्म 'मार्विन रूम' में लियोनार्डो डी कैप्रियो की मां का रोल निभाया. 1998 में वन टू थिंक' फिल्म में कैंसर रोगी महिला का चिरित्र निभाकर आलोचकों की बोलती बंद कर दी. उन्हें 1999 में ऑस्कर, गोल्डन ग्लोब और स्क्रीन एक्टर्स गिल्ड अवॉर्ड से नवाजा गया.

यही नहीं रूका यह सिलसिला...

2003 में फिल्म 'स्टैक ऑन यू'में काम किया. इसके बाद 'एंजल्स इन अमेरिका' सीरीज का हिस्सा बनीं और पांचवां गोल्डन ग्लोब और दूसरा एम्मी पुरस्कार हासिल किया. 2005 में उन्होंने रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'प्राइम' में एक मां की भूमिका निभाई.

इसी क्रम में 2006 में फिल्म 'द डेविल्स वियर्स प्रादा' में काम किया. जिसके लिए उन्हें 14वीं बार ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया. यह मेरिल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी.

2008 की रोमांटिक 'माँ मिया!' और 2009 में फिल्म 'जूली और जूलिया' में काम करके एक बार फिर दर्शकों का दिल जीत किया. फिल्म 'इट्स कॉम्प्लेक्टेड' के लिए उन्हें गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड के लिए नामांकन मिला. उसी साल इन फिल्मों के लिए ऑस्कर में भी नामांकन मिला.

2013 में 'अगस्त- ओसेज काउंटी' कैंसर से प्रभावित महिला की भूमिका निभाकर एक बार फिर ऑस्कर और गोल्डन ग्लोब में नामांकन हासिल किया.

2014 में 'द गिवर' में एक समुदाय के नेता की भूमिका निभाई और फिर 'द होमसमैन' में काम किया.

2016 में वह ओपेरा गायक के रूप में फिल्म 'फ्लोरेंस फोस्टर जेनकिन्स' में दिखाई दीं. फिल्म को ऑस्कर, गोल्डन ग्लोब, बफ अवॉर्ड्स के लिए नामांकन हासिल हुआ. उनका गाया गया गीत 'मामा मिया!' पूरी दुनिया में छा गया था.

खास बात यह रही है मेरिल ने कई भाषाओं में फिल्मी संवाद बोले.

उनके बोलने की कला ने ही यह शौहरत दिलाई थी. वे अपनी आवाज और भावनाओं के बीच शानदार तालमेल बैठातीं रहीं और एक के बाद एक फिल्म-शोज और अवॉर्ड अपने नाम करतीं गईं. उन्होंने कई ऑडियो बुक्स के लिए भी अपनी आवाज दी.

दान करने में रहीं सबसे आगे

मेरिल का नर्म दिल रहीं. उनके दान के किस्से आज भी किसी मिसाल से कम नहीं है. उन्होंने सार्वजनिक थियेटर को 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का दान दिया था. इसके अलावा 'नेशनल विमेन हिस्ट्री संग्रहालय' को भी मोटी रकम दान में दी.

उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में काम किया और 50 से ज्यादा महिला पटकथाकारों के साथ मिलकर 'राइटर लैब' बनाई. उन्होंने मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय में गणित और अंग्रेजी विषय में दो छात्रवृत्तियों की भी घोषणा की है.

इसके साथ ही वे कई सामाजिक सम्मेलनों में शामिल होकर मानव तस्करी और महिला अत्याचारों के खिलाफ भाषण दे चुकी हैं.

कैजेल के बाद डॉन गैमर बने साथी

मिरेल अपने प्रेमी कैजेल से बहुत प्यार करतीं थीं, पर जब वे दुनिया में नहीं रहे तो एक प्रसिद्ध वास्तुकार डॉन गैमर ने उनका खूब साथ निभाया. जिसके बाद मिरेल ने उनसे शादी कर ली. शादी के बाद मिरेल लॉस एंजिल्स में पति और चार बच्चों के साथ पूरी तरह पारिवारिक जिंदगी बिता रहीं हैं.हालांकि, वे एक बार फिर तब चर्चा में आईं, जब उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर उनकी जमकर खिंचाई की थी. उनकी स्पीच को इंटरनेट का काफी बार सुना गया. उन्होंने कहा 'डॉनल्ड ट्रंप ने एक विकलांग पत्रकार का मजाक उड़ाया था और उसकी नकल उतारी थी'.इस घटना का जिक्र करते हुए स्ट्रीप की आंखें भर आईं और उन्होंने कहा कि 'अगर कोई ऐसी हरकत करता है तो यह सोचकर ही मेरा दिल टूट जाता है'.बहरहाल मेरिल आज भी सामाजिक क्षेत्र में काफी सक्रिय है और पूरा कला जगत उनके लिए यही कामना करता है कि जो मुकाम उन्होंने हासिल किया है वह हमेशा बना रहे, ताकि आने वाली पीढ़ी उनसे सीख ले सके.**सुरेंद्र साम्भाणी की फेसबुक वाल से**

उपन्यासों के महारथी

मुबारक साल गिरह

'दुनिया में बहुत सारी मुश्किलें हैं, लेकिन एक बार जब आप आलीशान कार के भीतर बैठते हैं तो वो सब खिड़कियों के बाहर निकल जाती हैं'

उपन्यासों के महारथी,दुनियाभर में द विंची कोड के रचयिता के रूप में प्रख्यात डैन ब्राउन (22 जून 1964) ने अपनी जिंदगी में हास्य भी रचे हैं.लेकिन दुनिया को थ्रिल याद रहता है. उनका थ्रिल भी बेकार था, जब तक कि धर्म से जुड़ा रहस्य उनकी किताबों का मुख्य विषय नहीं बना. लेखक बनने से पहले वो संगीतकार और गायक भी रहे हैं. टीचर भी रहे हैं. स्क्रैश भी खेला

है.डैन के पिता रिचर्ड जी ब्राउन गणित के टीचर थे. इसके अलावा डैन के पिता और मां चर्च में गायक दल में संगीत देते थे और गाते भी थे. कहा जाता है कि बाद के अपने मशहूर उपन्यासों में डैन जिन सीक्रेट कोड की चर्चा करते रहते हैं वो उनके बचपन के पारिवारिक माहौल का ही परिणाम है. इनमें गणित, संगीत, भाषाओं जैसी कई चीजें थीं जो उनके माता-पिता के कामों से जुड़ी हुई थीं.

बचपन में क्रॉसवर्ड्स खेलना डैन के शौक में शुमार था. डैन की परवरिश एक धार्मिक माहौल में हुई थी लेकिन उनके शब्दों में ईसाईयत से उनके मतभेद धर्म के नए मायनों की तलाश की वजह से हुए थे.

डैन बड़े हुए तो कॉलेज की पढ़ाई करने के बाद गीत लेखक और गायक बनने की ठानी. कई जगह कोशिश की. पॉप संगीत भी गाया. बीच में स्कूल में बच्चों को भी पढ़ाया लेकिन जिंदगी बदली एक किताब ने. किताब का नाम था %डूम्सडे कॉन्सपिरेसी% और लेखक थे सिडनी शेल्डन.

डैन ने यहीं से फैसला किया कि अब रहस्य और रोमांच से भरी किताबों के लेखक बनेंगे. इसके बाद उन्होंने अपनी किताब डिजिटल फोर्टेस पर काम करना शुरू किया. बीच में उनकी एक दो हास्य पर भी किताबें आईं लेकिन कामयाबी वैसी नहीं मिल रही थी.

अपने पैशन का काम चुनने के बावजूद भी सफलता न मिलने के कारण डैन निराशा की ओर जा रहे थे. इन सारी कवायदों के बीच डैन की जिंदगी को अगर कोई बात बेहतर बना रही थी, वो थीं उनकी पत्नी. संगीत सीखने के दौरान डैन की पत्नी ब्लीथे न्यलॉन. ब्लीथे उम्र में डैन से 12 साल बड़ी हैं और शुरुआती दिनों में स्क्रिप्ट रायटिंग में उनकी मदद किया करती थीं. उस समय शायद ही किसी को उम्मीद थी कि वो दोनों शादी कर लेंगे. लेकिन साथ काम करने के लंबे समय के दौरान दोनों के बीच एक पर्सनल रिलेशनशिप डेवलप हुई जिसने बाद में शादी का रूप लिया.

डैन अपनी किताबों में रहस्य और रोमांच की दुनिया का वो संसार रचना चाहते थे जो उनके पूर्ववर्ती कई बड़े थ्रिलर लेखकों ने रचा था. लेकिन डैन की किस्मत जुड़ी हुई थी एक किरदार से. उसका किरदार का नाम था रॉबर्ट लैंगडन. इस किरदार का जन्म हुआ डैन के पहले बहुचर्चित उपन्यास एंजेल्स एंड डेमन्स में जो साल 2000 में आया था. इस उपन्यास के बाजार में आने के बाद डैन की लोकप्रियता बढ़ी फिर जिसे चार चांद लगाया एक ऐसे उपन्यास ने जिसने बिक्री के सारे कीर्तिमान ध्वस्त करके रख दिए.

इस उपन्यास का नाम था द विंची कोड. इस किताब को लेकर डैन पर तथ्यों के साथ छेड़छाड़ के आरोप भी लगे. डैन को इस उपन्यास से वो लोकप्रियता मिली जिसकी शायद वो तलाश भी कर रहे थे. इस कृति को लेकर डैन को जबरदस्त आलोचनाओं का सामना भी करना पड़ा लेकिन इन सारी बातों के बीच किताब बेस्ट सेलर रही.

एंजेल्स और डेमन्स और द विंची कोड दोनों ही उपन्यासों पर फिल्में भी बनीं. द विंची कोड की बहुत आलोचना हुई. फिल्मों की समीक्षा से जुड़ी वेबसाइट रोटेन टोमैटो पर इसे एक कमजोर फिल्म करार दिया गया लेकिन कमाई की बारी में एक बार फिर डैन बाजी मार ले गए. ये फिल्म 2006 में हॉलीवुड में कमाई करने के मामले में दूसरे स्थान पर रही. द विंची कोड में रॉबर्ट लैंगडन का किरदार मौजूद रहा.

इसके बाद 2013 में रॉबर्ट लैंगडन सीरीज का एक और उपन्यास आया इनफरनो. लैंगडन सीरीज में अभी तक डैन कुल पांच किताबें लिख चुके हैं जिनमें से एंजेल्स एंड डेमन्स, द विंची कोड इनफरनो और द लॉस्ट सिंबल (2009) फिल्मों के रूप में तब्दील हो चुकी हैं. एक और किताब है ओरिजिन(2017).इन सभी फिल्मों में रॉबर्ट का किरदार ऑस्कर विजेता एक्टर टॉम हैंक्स ने निभाया.

डैन की किताबों की अभी तक 20 करोड़ से भी ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं. डैन एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसने कई विधाओं में हाथ आजमाने की कोशिश के बावजूद हार नहीं मानी. जिंदगी के मायनों की तलाश में भटकते हुए जब एक इंटरेस्टिंग किरदार मिला तो उन्होंने रहस्य और रोमांच की वो दुनिया रच ही डाली जिस कामयाबी के लिए वो सारी मशक्कत कर रहे थे. **सुरेंद्र साम्भाणी की फेसबुक वाल से**

लखनऊ से प्रकाशित
स्वप्निल संसार समाचार पत्र समूह को आवश्यकता है जिला प्रमुख, एवं विज्ञापन संवाददाता की।
अपना बायोडाटा भेजे :
sansarswapnil@gmail.com
www.swapnilsansar.org